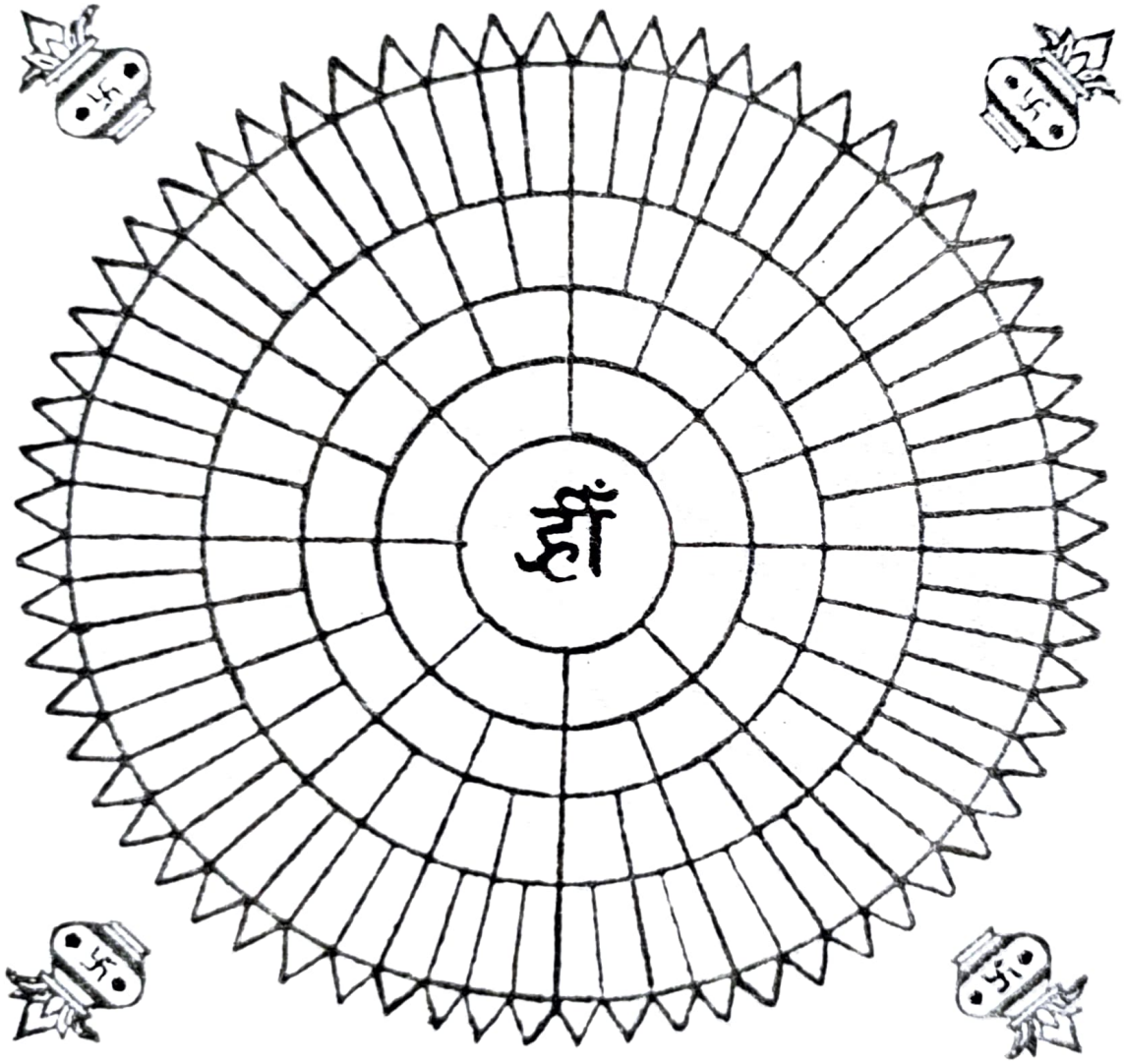

श्री शाँतिनाथ मण्डल विधान

https://frontdesk.co.in/jainism/

श्री शांतिनाथ मण्डल विधान पूजन

ले. संहिता सूरि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. सूरजमल जैन

स्थापना–गीत

आवो आवो नाथ मेरे तिष्ट इस शुभ मंडले ।
संसार बन्धन तोड़ने को बैठिये हृदये भले ॥
नाम शान्तिनाथ है शुभ शान्ति के दाता सदा ।
हे नाथ हम पूजें चरण तव होत याते भव विदा ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ सर्व कर्म बन्धन बिमुक्त सकल शान्तिकम् सम्पूर्णोत्तम हे पंचम चक्रेश्वर अत्रावतरावतर संवौषठ इत्याह्वान ।

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ सर्व कर्म बन्धन बिमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे द्वादश कामदेवेन्द्र अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ सर्व कर्म बन्धन विमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे षोड़षोत्तम तीर्थंकर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं

गीता

जो स्वर्ण भृंग भराय जल से पूजते जिन चरण को ।
तुरत पावे राज्य सम्पत्त मेट जामन मरण को ॥
श्री शाँतिनाथ महान् हो प्रभु शाँति के दातार हो ।
तीर्थंकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥१॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर कुंकुम शुद्ध चन्दन चर्चते पद युगल को ।
प्राप्त होय सुगन्ध देही सेव सुरि पद कमल को ॥

श्री शाँतिनाथ महान हो प्रभु शाँति के दातार हो ।
तीर्थंकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शाँतिनाथाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले अखण्ड सुगन्ध अक्षत चरण जिन पूजा करे ।
होय दीर्घायु निरोगी और सुन्दर तन धरे ॥
श्री शाँतिनाथ महान् हो प्रभु शांति के दातार हो ।
तीर्थंकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मल्लिका अरु वकुल मरुवा पुष्प सुन्दर लीजिये ।
जिन देव पद अर्चन सु करके काम वाण हरीजिये ॥
श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शांति के दातार हो ।
तीर्थंकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥४॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शाँतिनाथाय कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।

ले शुद्ध घृत युत शर्करा से व्यंजनों के थाल भर ।
भक्ति से पूजे चरण जिन रोग क्षुध तिन नाश कर ॥
श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शांति के दातार हो ।
तीर्थकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥५॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर निर्मित दीप लेकर आरती करता सदा ।
दैदीप्य होवे निज सदन, पावे नहीं भी दुःख कदा ॥
श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शान्ति के दातार हो ।
तीर्थकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥६॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शाँतिनाथाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर चन्दन आदि सुरभित धूप से पूजा करूँ ।
पाप सारे नाश होवें कर्म आठों को हरूँ ॥
श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शान्ति के दातार हो ।
तीर्थकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥७॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शाँतिनाथाय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नारिंग केले पूङ्ग श्रीफल आम जम्बीरी घने ।
पूजते श्री शाँति जिन को मिले वांछित शोभने ॥
श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शान्ति के दातार हो ।
तीर्थकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥८॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शाँतिनाथाय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरादि फल पर्यन्त बसु ले द्रव्य जिनवर पूजते ।
विघ्न नाशे ज्ञान भासे सुमन पूजित हूजते ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

श्री शांतिनाथ महान् हो प्रभु शान्ति के दातार हो ।
तीर्थंकर हो चक्रवर्ती नार शिव भरतार हो ॥९॥

ॐ अ ह्रां सिं आ हूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—स्तवन करे जिनराज का अनुपम सुखद सुसार ।
जाल नसे संसार का होवे सुक्ख अपार ॥

स्तवन माला

जय ज्ञान रूप ओंकार नमो, जय ह्रीं मध्य प्रभु शांति नमो ।
जय स्थावर जीव सुरक्ष नमो, जय एक अनेक सुईष नमो ॥१॥
जय चक्रवर्ती श्रीमान् नमो, जय शांति रूप परमात्म नमो ।
जय केवल ज्ञान सु भानु नमो, जय नाना भाषा रूप नमो ॥२॥
जय इच्छा रहित सुशांति नमो, जय गुण समुद्रशुभ गीत नमो ।
जय अष्ट कर्म हन वीर नमो, जय तीर्थंकर शांतीश नमो ॥३॥

जय रहित विकल्प निःकंप नमो, जय मुक्ति वधु परमात्म नमो ।
जय यति आधार सु चतुर नमो, जय लीन निजातम रूप नमो ॥४॥
जय रत्नत्रय गुण युक्त नमो, जय ज्ञान व्याप्त परमेश नमो ।
जय पर सुख दाता विष्णु नमो, जय जीव दयामय तीर्थ नमो ॥५॥
जय विश्वहितंकर वाणि नमो, जय शांतिनाथ गुण थोक नमो ।
जय दुर्जय विषहर अगद नमो, जय कुरु वंशापति देव नमो ॥६॥
जय ऋषिमन हर्षित कार नमो, जय कुल क्रम भृत अरहंत नमो ।
जय अद्भुत रूप स्वरूप नमो, जय ह्रीं बीज से युक्त नमो ॥७॥
जय क्षमा शांति के ईश नमो, जय विघ्न विनाशक वीर नमो ।
जय संज्ञा शांति सुशोभ नमो, जय भय हर्ता जग बन्धु नमो ॥८॥
जय माया रहित सु शांति नमो, जय मुक्ति पुरी के ईश नमो ।
जय पाप कलाप विनाश नमो, ब्रह्म सूरज को प्रभु तार नमो ॥९॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

गीता

जो शांति अष्टक को सदा ही कंठ धारे हार सम ।
उनके घरों में होय सम्पद विपद भागे एक दम ॥

अन्त में वह कर्म हनि कर पाय मुक्ति स्वभाव से ।
याते सदा पद कमल पूजों नाम कर ले भाव से ॥ पुष्पांजलि

दोहा—शान्ति अष्टक को सदा पढ़ता मन उमगाय ।
दुःख नाशे उसका सभी अन्तिम शिवपुर जाय ॥

प्रथम वलयाष्ट कोष्ठों परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अडिल्ल छन्द

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥

हम पूजे हं बीज सहित जिन देव को ।
शांतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय शोभनपद प्रदाय ह्मल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे भं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख-देव को ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय सुरपुष्पवृष्टिं सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपद प्रदाय भमल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वर्वर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे मं बीज सहित जिनदेव को ।
शांतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुखदेव को ॥३॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय मल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे रं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय चामरोज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरोज्वल शोभनपद प्रदाय रम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे घं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे झं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय भामंडलसत्प्रातिहार्य मंडिताय भामंडल प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय झम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥
हम पूजे सं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय दुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभिप्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय सम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शाँतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

स्ववर्गों से प्राप्त सदा पिंडाक्षर ।
अग्नि बिन्दु से युक्त सकल षड अक्षर ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

हम पूजे खं बीज सहित जिन देव को ।
शाँतिनाथ प्रभु कर्म हरि सुख देव को ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यमंडिताय छत्रत्रयशोभन पदप्रदाय सर्वविघ्नहराय खम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । ॥

दोहा—ह भ म र घ झ स ख है सही, बीज वर्णये जान ।
पूजूं अर्घ्यं संजोय के नशे विघ्न दुखदान ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय प्रातिहार्यष्ट सहिताय बीजाष्ट मंडल मंडिताय सर्वविघ्न शांति कराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

दोहा—शान्तिनाथ प्रभु के चरण पूजे भक्ति प्रसार ।
कर्म कटे सब जन्म के पावे शिवपद सार ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

॥ अथ द्वितीय वलय षोडश कोष्ठों परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

द्वितीय वलय

त्रिभङ्गी छन्द १६ अर्घ्यं

शाश्वत दर्शन ज्ञान सुखामृत बल अनन्त प्रभु धारत है ।
योग रूढ़ हो आत्म महाबल घातिकर्म को टारत है ॥
ऐसे जिनवर शाँति प्रभु को इन्द्र यतीन्द्र नरेन्द्र भजे ।
हम पूजें उन पद पंकज को रोग शोक दारिद्र भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतेकसमतिक्षेत्रार्यखंडे भूत भविष्यत्वर्तमानर्हत्परमेष्टि पद पंकजे सन्मति तद्भक्त्युपेतामलतर खंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

अष्ट कर्म से रहित जिनेश्वर अष्ट महा गुण पावत है ।
दुष्ट महावैभाविक परिणति रहित स्वभाव सु राजत है ॥
ऐसे वे त्रैकालिक सिद्ध नित्य निरंजन राजे हैं ।
स्तवन करें उन सिद्ध समूह का पूजें सब दुःख भाजे हैं ॥२॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवेभरतैरावत विदेहादिशतैक सप्ततिक्षेत्राय खंडे भूत भविष्यत वर्तमान सिद्ध परमेष्ठिपदपंकजे सन्मति सद्भक्तियुपेतामलतर-खंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सुन्दर मन से पालन करते पंच महाव्रत धारी है ।
पलवाते हैं करुणा शिष्यों से व्रत जो सुखकारी है ॥
कुसुम बाण मदमर्दन करते उज्ज्वल गुण सु प्रचारी है ।
पद आचार्य सुशोभित गुरुवर शतशत नमन हमारी है ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैक सप्ततिक्षेत्रार्य खंडे भूत भविष्यत वर्तमानचार्यपरमेष्ठि पद पंकजे सन्मति सद्भक्तियुपेतामलतर-खंडोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

द्वादशांग के ज्ञानी मुनिवर वृहस्पति बुधि धारी है ।
दुर्मत-पर्वत मत्त जनों के वचन सु वज्र विदारी है ॥
नित्य निरंजन सिद्ध अमिट सुख शिवमग देश न हारी है ।
ऐसे गुण के धारक पाठक तिन पद ढोक हमारी है ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैक सप्ततिक्षेत्राय खंडे भूत भविष्यत वर्तमान पाठक परमेष्ठिपद पंकजे सन्मतिसद् भक्तियुपेतामलतर-खंडोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

शिव सुख कारण महामुनीश्वर धर्म ध्यान तप लीन रहे ।
चपल कुघोटक इन्द्रिय पाँचों दमन करे अरु काम दहे ॥
आतम ज्योति जगावे मुनिवर सब विषयों से रहित्त रहे ।
अमिट महासुख पावे भविजन पूजे ध्यावे भक्ति गहे ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैक सप्तति क्षेत्रार्य खंडे भूत भविष्यत वर्तमान सर्व साधुपरमेष्ठिपद पंकजे सन्मतिसद् भक्तियुपेतामलतर-खंडोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

घातिकर्म निर्मुक्त महा जिन देव अठारह दोष रहित ।
कर्म कृपाणी जिनवर वाणी द्वादशांग है लोकमहित ॥
परमपूज्य निर्ग्रन्थ गुरु जो सप्त तत्त्व श्रद्धान सहित ।
सम्यग्दर्शन पूजो भविजन मुक्त दोष अष्टांग सहित ॥६॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वामलतर खंडोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

मतिज्ञान के भेद तीन सो छत्तीसी जिनवर ने कहा ।
द्वादशांग अरु पूर्व चतुर्दश नाम महा श्रुत हिये लहा ॥
अवधिज्ञान मनपर्यय केवल-ज्ञान सदा सब जग्गमगा ।
वसु विधि अर्घ्य बनाकर पूजे सबही मन के छोड़ दगा ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यज्ञानामलतर खंडोज्झित निदान बंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

पंच महाव्रत पंच समीति गुप्तित्रय चरित्रलहा ।
शुक्ल ध्यान सिद्धि के कारण धारण करते भव्य महा ॥
सम्यक्चारित बिना न मुक्ति हुई कभी जिनवर ने कहा ।
चारित्र सम्यक धारो याते मुक्ति गमन को पंथ महा ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्त्वचारित्रा मलतर खंडोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

(कामिनि मोहन छन्द)

ज्ञान वर्ण कर्म पंच भेद युक्त है सही ।
न होन देत ज्ञान गुण आत्म दुक्ख पावही ॥
कर्मनाश हेतु दया-सिन्धु-शांतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावर्णकर्म महाबन्ध बन्धन कृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

दर्शवर्णकर्मभेद नव प्रकृति जानिए ।
न होन देत दर्श गुण मन में यह ठानिए ॥
कर्म नाश हेतु दया–सिन्धु–शाँतिनाथ को ।
अष्टद्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनावर्णकर्मबन्ध बन्धन कृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

वेदनीय कर्म दोय भेद युक्त है सही ।
न होन देत सुख कभी कहत जिन देव ही ॥
कर्म नाश हेतु दया–सिन्धु–शांतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्मबन्ध बन्धन कृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

मोहनीय कर्म दुष्ट बीस आठ है सही ।
होय न सम्यक्त्व सौख्य आत्म दुःख पाव ही ॥
कर्म नाश हेतु दया–सिन्धु–शांतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री प्रचंड मोहनीय कर्मबन्ध बन्धन कृते सतितत्कर्म विपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

आयु कर्म चार भेद अशुभ जिन भासिया ।
होय न अवगाह गुण कर्म यह खासिया ॥

कर्म नाश हेतु दया–सिन्धु–शांतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री आयु कर्मबन्ध बन्धन कृते सतितत्कर्म विपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

तैरानु भेद युक्त यह नाम कर्म है बली ।
सूक्ष्मत्व गुण यही न हो न देत है छली ॥
कर्म नाश हेतु दया सिन्धु शान्तिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री आयु कर्मबन्ध बन्धन कृते सतितत्कर्म विपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

ऊँच नीच है यह गोत्र कर्म जानिए ।
अगुरु लघु गुण महा न होन देत मानिए ॥
कर्म नाश हेतु दया सिन्धु शांतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१५॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं श्री गोत्र कर्मबन्ध बन्धन कृते सतिततत्कर्मविपाकोद्‌भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

अन्तराय कर्म बली पाँच भेद है सही ।
अनंन्तशक्ति हो न देत कहत जिन देव ही ॥
कर्म नाश हेतु दया सिन्धु शाँतिनाथ को ।
अष्ट द्रव्य पूजते नमाय निज माथ को ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरायकर्मबन्ध बन्धन कृते सतिततत्कर्मविपाकोद्‌भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

पूर्णार्घ्य (गीता)

अरहन्त सिद्धाचार्य पाठक साधु परमेष्ठी कहे ।
द्रग ज्ञान चारित युत सदावर ध्यान में ही लग रहे ॥
पूजते वसु द्रव्य लेकर शुद्ध मन वच काय से ।
तार दो भव सिन्धु हमको वीनती जिन राय से ॥१७॥

दोहा–पंच परमेष्ठि सदा, कर्म विनाशक जान ।
जो ध्यावे श्रद्धा सहित, मिले मुक्ति शुभ थान ॥

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिपददायक दर्शन ज्ञान चारित्र कारक कर्माष्टकवारक श्री शांतिनाथाय षोडशांगे द्वितीय वलयमध्ये पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ तृतीय वलयमध्येद्वात्रिंशति कोष्ठोपरिपुष्पांजलिक्षिपेत् ॥

अथ तृतीय वलय

जोगीराश ३२ अर्घ्य

इन्द्र चतुर्विध काय जिनालय, भक्ति भाव से आवे ।
संघ में लावे निज परिकर को, मन में हर्ष बढ़ावे ॥
सम्यक दर्शन जिन पूजन से, होवे पावन भाई ।
पद पंकज को पूजो याते, शांतिनाथ जिन राई ॥

इति पुष्पांजलि क्षिपेत्. . . . . .

https://frontdesk.co.in/jainism/

दोहा–देव चतुर्णि काय के आवे हर्ष बढ़ाय ।
लेकर निज परिवार को पूजा भाव रचाय ॥
इन्द्र असुर कुमार, सुजाती, लेकर निज परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर जाकर, पूजे भक्ति अपारा ॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रीश्वर, द्वादश काम सुदेवा ।
षोड़स तीर्थंकर हम पूजे होवे संस्सृति छेवा ॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र कुमारेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

निज परिवार सहित धरणेन्द्र, भक्ति भाव गुण गावे ।
अष्ट द्रवव्य ले मंदिर आवे, पूजे हर्ष बढ़ावे ॥ शान्तिनाथ पंचम् ....

ॐ ह्रीं धरणेन्द्रकुमारेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

भक्ति भाव से इन्द्र सुपर्णा, बैठ विमान जो आवे ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजे जिन गुण गावे ॥ शान्तिनाथ पंचम..

श्री ह्रीं श्री सुपर्णेन्द्र कुमारेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिन नाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

ले द्वीपेन्द्र सहित कुटुम्बी, मान गलित हो आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शान्तिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री द्वीपेन्द्र कुमारेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

वह उदधीन्द्रा निज परिकर सह, भक्ति हिये धर आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शान्तिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री उदधीन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

स्तनित कुमार सु सह परिवारा, नाच नाच कर आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शान्तिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री स्तनिततेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

कुमार सुविद्युत्शक्र, जिनेश्वर, भक्ति करे हर्षावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शांतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री विद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

दिककुमार सु सहित कुटुम्बी, भक्ति करे सुख पावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री दिककुमारेद्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

पावक इन्द्र सु भक्ति हिए में, धरकर पाप खपावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री अग्निन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

वायु कुमार सुसंघ कुटुम्बी, सम मन कर जिन ध्यावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री वातकुमारेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

किन्नर इन्द्र सु ले परिवारा, छम छम छम कर आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव पर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

किं पुरुषेन्द्र सुनाम सुशोभित, भक्ति करे सुख पावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री किंपुरुषेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

महोरगेन्द्र सु ले परिवारा, स्तुति करे हर्षावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शांतिनाथ पंचम–

ॐ ह्रीं श्री महोरगेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

गन्धर्वों के इन्द्र सुभाई, निज परिवारसु लावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शांतिनाथ पंचम–

ॐ ह्रीं श्री गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

यक्षमघा भी मन वच तन से, शुद्ध होय जिन ध्यावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री यक्षेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

इन्द्रसुराक्षस सद्बुद्धिधर कुपरिणति को गमावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

निजतिरिया सह भूतेन्दर भी शीघ्र हो हर्षित आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री भूतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। १७ ।।

इन्द्र पिशाचों सह परिवारा, हृग गुण पाने आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१८।।

चन्द्र भी अपने सह परिवारा, हर्ष हर्ष गुण गावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१९।।

इन्द्र सुभास्कर हे तेजस्वी, जिन पद प्रीति लगावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री सुभास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२०।।

https://frontdesk.co.in/jainism/

सौ धर्मेन्द्र सु पुलकित मन से, श्री जिन चँवर ढुलावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२१॥

ईशानेन्द्र सु हर्ष हर्ष कर, आवे चँवर ढुलावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री ईशानेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२२॥

सनत कुमार सु देव चरण में, झुकि झुकि शीष नमावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री सनत्कुमारेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

माहेन्दर भी भक्ति रस में जिन वन्दन को आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री माहेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

सद्बुद्धि लेकर ब्रह्मेन्दर, सह परिवार जु आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२५॥

लान्तवेन्द्र जी माया तजकर जिन गुण गा हर्षावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

भक्ति भाव से वह शुक्रेन्दर बैठ विमानों आवे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ॥ शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२७॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

शतारेन्द्र जिन पद में आकर, भक्ति को दर्शावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री शतारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२८।।

सम्यग्दृष्टि आनत शक्र जिनको मन से ध्यावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री आनतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२९।।

बाजे बजाकर नानाविधि के, प्राणतेन्द्र गुण गावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३०।।

आरणेन्द्र भी मन वच तन से, स्तुति पढ़े हर्षावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री आरणेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३१।।

स्वर्ग अच्युत के इन्द्र सुआकर, जिन पद प्रीति लगावे ।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजे शीष नमावे ।। शाँतिनाथ पंचम ...

ॐ ह्रीं श्री अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३२।।

भुजंग प्रयास पूर्णार्घ्य

भावन तथा व्यन्तर ज्योतिषि देवा ।
करे स्वर्ग वासी है जिनकी सु सेवा ।।
आकर के इन्द्र ये बत्तीस नामी ।
पूजन करे तब शान्तीश स्वामी ।।३३।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्णिकाय देवेन्द्र पूजित श्री शांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३३।।

https://frontdesk.co.in/jainism/

गीता

घूमते हैं देवता गण यत्र तत्र सु राजते ।
भक्ति कर जिनदेव की ये जन्म उत्तम मानते ॥
आइये इस यज्ञ शांतिनाथ की पूजा करें ।
जन्म मृत्यु वृद्ध के ये शीघ्र ही संकट टरे ॥
दोहा–देव चतुर्णिकाय के भ्रमत भ्रमत भूमाहिं ॥
करे भक्ति जिन देवकी मनमें हर्ष बढ़ाहि ॥
दोहा–मन वच तन कर पूजता षोड़श जिन महाराज ।
पुत्र मित्र सम्पत्ति बढ़े सरे सकल सब काज ॥

इति चतुः षष्टिकोष्टोपरिः पुष्पांञ्जलि क्षिपेत ॥

चतुर्थ वलय ६४ अर्घ्य

भुजंग प्रयास

हुआ दोष मेरे विकारी जो मन से ।
हुई व्याधि जिनवर जी उसही अघन से ॥
तद् विघ्न नाशक हो शान्ति जिनेश्वर ।
नमो भक्ति पूजे हो मुक्ति हृदेश्वर ॥

ॐ ह्रीं श्री मानसिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

हुआ दोष मेरे विकारी वचन से ।
हुई व्याधि जिनवर जी उसही अघन से ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं श्री वाचनिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

हुआ दोष मेरे विकारी जो तन से ।
हुई व्याधि जिनवर जी उसही अघन से ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं श्री कायिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

हुई लक्ष्मी पुरराज ग्रहे जो नष्ट ।
वही देव देता है हमको ही कष्ट ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं जिनराज लक्ष्मीपुर राज्यगेहपदभ्रष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

उदय पूर्व कर्मो से आपद जो आवे ।
वही त्रास स्वामी जी मुझको भुलावे ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ५ ।।

कुष्ट जलोदर अनेकों कु रोगा ।
बड़ा कष्ट जिनवरजी हमने ही भोगा ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं भीम भगंदर गलित कुष्ट गुल्म रक्त पित्तवात कफस्फोटकाद्युपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

इष्ट वियोगा अनिष्ट कु योगा ।
हुआ दुक्ख जिनवरजी परके संयोगा ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं इष्ट वियोगानिष्टसयोगोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

स्व चक्र परका उपद्रव जो आवे ।
वही उपसर्ग जो हमको सतावे ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं स्वचक्र पर चक्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

अनेकों कुशस्त्रों की आपद जो आवे ।
यही उपसर्ग जो निज को भुलावे ।। तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

मगरमच्छ आदि उपद्रव हैं भारी ।
यही दुक्ख भासे प्रभु त्रासकारी ।। तद् विघ्न–

https://frontdesk.co.in/jainism/

ॐ ह्रीं जलचर जीव दुष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

शूकर सिंह गजों दुक्ख होवे ।
और अनेकों उपद्रव जु होवे ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं व्याघ्र सिंह गजादि वन पर्वतवासी श्वापदाद्युपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

पृथ्वी गगनचर उपद्रव कुजीवा ।
होवे महा दुक्ख जो है सदैवा ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं भूचर गगनचर क्रूर जीवोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

भीषण विषैले अहि वृश्चिकादि ।
उपद्रव जो होवे यही व्याधि आदि ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं व्याल वृश्चिकादि विषदुर्द्धरोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

नखश्रृंगोवाले पशु दुक्ख देवे ।
कर्म असाता से कष्ट जु सेवे ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं दुष्ट जीव पद करनखोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

दंशमशककंटकादि उपद्रव ।
दुक्खों को जिनवर जी भोगूं हूँ नव-नव ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं चंचुतुडंदाढ़ा कंटकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

चारों तरफ से जो अग्नि जलावे ।
यही दुक्ख जिनवरजी सबको सतावे ॥ तद् विघ्न–

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शाँतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

★ गीता-छन्द ★

कल्पान्त काल प्रचंड वायु वेग से जब चलत है ।
कांपे सुभूधर वृक्ष टूटे नीर निधि भी हलत है ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

श्री शान्तिनाथ जिनेश के पद कमल को नित ध्याय है ।
नाश होवे महा उपद्रव अन्त शिवपुर जाय है ॥१७॥

ॐ ह्रीं प्रचंड पवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

बीच सागर पतित नौका, फूटते जल आय है ।
शक्ति नहीं है तैरने की, आश जीवन जाय है ॥ श्री शान्तिनाथ ...

ॐ ह्रीं नौका स्फुटित पतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

घनघोर जंगल पर्वतों में भूल से फँस जाय है ।
व्याघ्र सिंह क्रूर चीता, आय कर डरपाय है ॥ श्री शान्तिनाथ ...

ॐ ह्रीं वननगमेदिनी भयंकरोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१९॥

नदिया सरोवर कूप वापि, मध्य उदधि जाय है ।
डूबते जल बीच में ही, पूर्ण जिन्दगी न पाय है ॥ श्री शाँतिनाथ ...

ॐ ह्रीं श्री नदी सरोवराब्धि कूपह्रदोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२०॥

घनघोर गर्जे मेघ जब पानी पड़े बहु जोर से ।
चारों तरफ से बिजली कड़के, लगत भय चहुं ओर से । श्री शांतिनाथ.

ॐ ह्रीं श्री विद्युत्तापातादि भीमांबु वृष्टयुपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२१॥

महा भयंकर युद्ध होवे, काटते सिर को जहाँ ।
शत्रु के वश हो गयो, निकसत नहीं पाये तहाँ ॥ श्री शांतिनाथ...

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलादिनिकटोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२२॥

पितृबन में नाचते डाकिन पिशाची क्रूर हो ।
शाकिनी का महा उपद्रव देख सके नहीं सूर हो ॥ श्री शांतिनाथ...

ॐ ह्रीं शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत पिशाचादि भय निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२३॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

मोहनीय स्तंभ विद्या नाम उच्चाटन कहे ।
इन कुविद्या वश में होवे मूढ़ जीवन को दहे ॥ श्री शांतिनाथ. ...

ॐ ह्रीं मोहनस्तंभनोच्चाटन प्रमुखदुष्टविद्योपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

दुष्ट ग्रह अरु कर्मोदय से वेदना बहु पाय है ।
शमन करने हेतु सोचे पर नहीं वह जाय है ॥ श्री शांतिनाथ ...

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहादयुपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

चारों तरफ ही सांकलों से हाथ पैरों बांधिया ।
घाव होवे श्रृंखलों से दुक्ख जो जन पाइया ॥ श्री शाँतिनाथ...

ॐ ह्रीं श्रृंखलाद्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

अल्प आयु मरण होवे कष्ट पाते हैं सदा ।
मन निरंतर विकलता से रहत जिससे सुख विदा ॥ श्री शांतिनाथ ...

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२७॥

बहु वृष्टि होवे अनावृष्टि शीत से जल जाय है ।
खेत में नहीं धान होवे कर्म से दुख पाय है ॥ श्री शाँतिनाथ...

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२८॥

व्यापार के कारण सदा ही यत्र तत्र भ्रम रहा ।
पर लाभ हुआ है नहीं जिससे अति ही दुख सहा । श्री शाँतिनाथ...

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२९॥

जनक माता भाई बन्धु पुत्र प्यारा है घना ।
पर पाप कर्म उदय आवे हो विरोधी ये जना ॥ श्री शांतिनाथ...

ॐ ह्रीं बन्धुत्वोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३०॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

जिसके न होवे पुत्र तिरिया वंश में कोई नहीं ।
होय आकुलता उसी से कष्ट भी पावे सही ।। श्री शाँतिनाथ

ॐ ह्रीं अकुटुम्भोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३१।।

पाप कर्मोदय से प्राणी अयश पावे लोक में ।
नहीं दिखावे मुँह किसी को रात दिन हो शोक में ।। श्री शांतिनाथ...

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।३२।।

दोहा–गुण अनन्त प्रभु राजते, कैसे गाऊँ नाथ ।
शक्ति दो प्रभु जी हमें गावें गुण हरषात ।।

★ जोगी राशा ★

त्रिभुवन हितकर गुण मणि आकर शिव सुखदायक तुम हो ।
तीर्थंकर चक्रीपद भूषित कामदेव भी तुम हो ।।

चरण कमल जिन शाँति प्रभु के मन हर द्रव्य सजाकर ।
पूजे मन वच काय शुद्ध कर निवसे शिवपुर जाकर ।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण कल्याण मंगल प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३३।।

सुख सागर अरु ज्ञान सु केवल वांछित वस्तु देवे ।
ऐसी जिनवर की जो पूजन मन वच तन कर लेवे ।।
तीनों पद से युक्त जिनेश्वर, मायात्यज जो ध्यावे ।
कर्म नाश कर शिवपुर जावे, मुक्ति पति कहलावे ।।

ॐ ह्रीं चिन्तामणि समान चिन्तितफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामति स्वाहा ।।३४।।

भव तप नाशक ज्ञान प्रकाशक कल्पवृक्ष सम दानी ।
ऐसी जिनवर की जो पूजन मन से करता प्राणी ।। तीनों पद ...

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमाकल्पितार्थ फलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३५।।

https://frontdesk.co.in/jainism/

काम धेनु सम नाम जिन्हों का और मनोरथ पूरे ।
ऐसी जिनवर की जो पूजन करता कल्मष चूरे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं कामधेनुपमाकामनापूर्ण फलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३६॥

धर्म धुरन्धर ध्यानी स्वामी मुनिगण चित में धारे ।
ऐसी जिनवर की जो पूजन करते भव दुख टारे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं परमोज्वल धर्मध्यान बाधा रहित अवधबोधप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३७॥

तीन लोक के नेत्र जिनेश्वर, शुभ तन विस्मयकारी ।
पूज करे जो मन वच तन से, होवे भव दुख टारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं कामदेव स्वरूप प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३८॥

सौरभ जिनके शुभ तन मांही, और पदारथ नाई ।
देव इन्द्र मिल उत्सव करते, पूजे उत्तम भाई ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं सुगन्ध शरीरयुक्त भव प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३९॥

भामण्डल भास्कर वत चमके, भविजन आनन्दकारी ।
हुए त्रिलोकी नेत्र सु स्वामी पूजे हम सुखकारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारक पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४०॥

क्षीरोदधिसम धवल सु जिन गुण, देव भक्ति से गावे ।
उत्तम सद्गुण पाने हेतु, भगवन् पूज रचावे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं परमोज्वलगुण गण सहित पद प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४१॥

विद्वदरत्न गुणों को धारे, तत्व प्रकाशन हारी ।
वाचस्पति सम पदवी पावे, प्रभू जो पूजे पुजारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं वाचस्पति समान पद प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४२॥

नवनिधि स्वामी रत्न चतुर्दश, षड खंडाधिप होवे ।
देव मनुज खग नमत सुपद युग, जिन पूजन से होवे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं चक्रवर्ती पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४३॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

मन को प्यारी सद्गुण वाली, दोनों कुल विकसाती ।
रूपवती हो पुत्रवती हो जिनके जो गुण गाती ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं उभयकुलकमल विकाशन सुर्या शुसमाचरण प्रतिष्ठित गुण मंडित अत्यन्त सुन्दराकृति पुत्रवन्ति मंडन पद प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४४॥

देव अर्चनादिक षटगुण के, धारी श्रावक होवे ।
बुद्धिवान हो व्रतधारी हो, जो जिन पूजक होवे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं श्रावक सद्वृत्तकरण बुद्धि पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४५॥

शरद् ऋतु की पूर्ण चाँदनी, सब जन आनन्दकारी ।
तद समकीर्ति होवे जग में, शान्ति प्रभु के पुजारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं परमोज्वलकीर्ति पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४६ ॥

होवे अटूटी सम्पत सारी, धनदोपम कहलावे ।
दानवीर पद नर ले पावे, अर्चन करने जावे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं गर्वरहित परमलक्ष्मी पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४७॥

पशु नारक कुगति नहीं जावे, गावे प्रभु गुण भाई ।
नर सुर उत्तमगति परलोका, जो पूजे जिनराई ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंच गति रहित नरसुरगति सहित भव प्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४८॥

दुर्लभ है तीर्थंकर पदवी, भवन तीन में सोहै ।
सोलह कारण भावन अरु, जिन पूजन से वह हो है ॥ तीनों पद.

ॐ ह्रीं षोड़शकारण भावना साधनबल पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४९॥

तीर्थंकर माता सम होवे, षोड़स स्वप्ने देखे ।
देव देवियाँ सेवा करते, पूजे हर्ष विशेखे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यैक जननीपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५०॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

मेरु शिखर पर हो अभिषेक, ऐसी पदवी पावे ।
सुमन सुमनियाँ उत्सव करते, पूजन से लो लावे । तीनों पद...

ॐ ह्रीं मेरु शिखरे स्नानयुक्त पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५१॥

सिद्ध साक्षी से दीक्षा होती, जो अनन्त सुखकारी ।
ऐसा नरभव पाके भविजन, पूजे प्रभु अविकारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं सिद्ध साक्षीदीक्षाकारीभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५२॥

मुक्ति प्रदायक उत्तम संहनन, युक्त शरीर सु होवे ।
पुण्यवान वह है इस जग में, जिन पूजन रत होवे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं व्रजवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५३॥

रत्नत्रय सु सज्जित होवे, यथाख्यात हो भाई ।
पालन की शक्ति हो जावे, जिन पूजन सुखदायी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्त बलप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५४॥

चेतन आतम ध्यान सु अमृत, स्वाद जहाँ पर आवे ।
ऐसा योग मिले भव सुन्दर, प्रभु पूजन से पावे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृत स्वादसहित भवप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५५॥

देव भी पावन समवशरण में, बैठे भव्य अशोक ।
धर्मामृत को पान करत है, पूजे जिन दे ढोक ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं समवशरणविभूति पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५६॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

दिव्य ध्वनि खिरती चतुवार रात दिवस जिन सोई ।
ऐसी शक्ति प्रभु पूजन से नमन करे सो होई ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं सत्केवल ज्ञानविभूति पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५७॥

अष्टकर्म से रहित जिनेश्वर, गुण आठों सुखदायी ।
सिद्ध निरंजन पदवी पावे, जो पूजे जिनराई ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं निरंजन पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५८ ॥

पद पंकज श्री शान्ति प्रभु के, मन को समरस देते ।
मनरंजन सु पाय निरंजन, पूजन शिवपद लेते ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं मनोन्दकरण समर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५९ ॥

शाँति प्रदायक वचन जिनेश्वर, सकल अङ्ग से निकले ।
स्तवन करे जिनवर का भविजन, नष्ट हो कल्मष सकले ॥ तीनों पद..

ॐ ह्रीं वचनान्दरकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६०॥

नग्न दिगम्बर परम सु सुन्दर, प्रभुतन आनन्द दाता ।
दर्शन से भविकल्मष नाशे, पूजे जिन गुण गाता ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं कायानन्दकरण समर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६१॥

प्रभु पूजन से शिव सुख मिलता, जो जन मन से ध्यावे ।
अर्थ वर्ग साधन फल हो तो, विस्मय नाही कहावे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्ध साधनकरण श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६२॥

प्रभु पूजन से शिव सुख मिलता, भक्ति से गुण गावे ।
काम वर्ग साधन फल हो तो, विस्मय नाही कहावे ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६३॥

प्रभु पूजन से शिव सुख मिलता, मगन होय जो करता ।
सिद्ध होय साधन सब विधि का, भवि विस्मय क्यों धरता ॥ तीनों पद..

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधन सिद्धकरण समर्थाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥६४॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

चतुषष्ठी ऋद्धी के स्वामी, हो अनन्त गुण धारी ।
देवों के हो देव जिनेश्वर, पूजूं भक्ति प्रसारी ॥ तीनों पद...

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानगंगाय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६५ ॥

पूर्णार्घ्य

दोहा–शून्य नेत्र शशि तुल्य जो संख्या वाले देव ।
शान्तिकरण दुख हरण है पूरण अर्घ सदैव ॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशति अंगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६६ ॥

गीता

अरहन्त बिन इन देह धारी, को शरण नहीं अन्य है ।
जो जिनेश्वर शाँति प्रभु हम, हृदय तुम बिन शून्य है ॥
ज्यों समुद्र तैरने, संसार में, वर नाव है ।
त्यों भवोदधि पार जाने, भक्ति जिन यह भाव है ॥६७॥

इति पुष्पांजलिक्षिपतेः

ॐ ह्रीं शाँतिनाथाय जगत् शाँतिकराय सर्वोपद्रवशांति कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा ॥
(जातिपुष्प या लवंग से १०८ जाप देवें)

★ गीता ★

जय होत पंचम चक्रवर्ती बारवे रति ईशजी ।
गुण गण अधीशं तीर्थंकर हो सोलवे शांतीशजी ॥

पूजते भव भय विनाशक आपको जिन देवजी ।
नमन करते पद कमल में गात गुण महादेवजी ॥

दोहा–कामदेव चक्रीशजी हो तीर्थंकर आप ।
गाऊँ तव गुणमालिका मिटे सकल संताप ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

अथ जयमाला

त्रोटक

जय हस्तिनागपुर जनम जिनं । हो बाल सूर्य सम आप जिनं ॥
जय माता एरादेवी जिनं । जय विश्वसेन है पितृ जिनं ॥१॥
जय हेम वर्ण तन आप लखा । जय धनु चालीस उतंग भखा ॥
हो चक्रवर्ती षट् खण्डाधिप । जय कामदेव हो आप महिप ॥२॥
जय षोड्ष तीर्थंकर जु बने । इन पदवी त्रय से आप सने ॥
कुछ कारण पाकर शाँति जिनं । वैराग्य हुआ है आप जिनं ॥३॥
जय दूर्धर तप प्रभु आप किया । जय दुष्ट कर्म चकचूर किया ॥
जय शुक्ल ध्यान में आप लीन । जय अरिरज रहस विनास कीन ॥४॥
जय समवशरण उपदेश दिया । जय भव्य कमल विकसाय दिया ॥
जय नष्ट किये अवशेष कर्म । जय मुक्ति रमा के परम शर्म ॥५॥

जय भव सागर के पोत जिनं । जय कर्म विपाटक शाँति जिनं ॥
जय विघ्न विनाशक शाँति जिनं । जय मोह प्रहारक शाँति जिनं ॥६॥
जय श्रेष्ठ गुणों के धारक हो । जय मंगलमय शुभकारक हो ॥
जय भवि हित हेतुक आप जिनं । जय मन्मथ मारक शाँति जिनं ॥७॥
जय वज्रपाप के खण्डक हो । वृषस्याद्वाद के मण्डक हो ॥
जय केवल ज्ञान सुभास्कर हो । जय नयनकमल के विभाकर हो ॥८॥
जय सम्यक् साधन आप जिनं । जय सुगति प्रदायक शांति जिनं ॥
जय कुगति गमन के अर्गल हो । जय दुख दावानल के जल हो ॥९॥
जय शांतिनाथ जगसात समं । हो भवन तीन के पितृ समं ॥
जय परहितकारी शाँति जिनं । जय भवहित देशक शाँति जिनं ॥१०॥
जय नाना रोग रु शोक हरा । जय संपति विपुलसु आप करा ॥
जय शिव सुख दाता शाँति जिनं । जय भव भय हरता शाँति जिनं ॥११॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

जय गर्व विनाशक शाँति जिनं । जय बहु गुणदाता शाँति जिनं ॥
जय ग्रह बाधा दुख नाशक हो । जय अहिव्यालादि भगायक हो ॥१२॥
जय भव्य कमल बोधन दिनेश । जय आनन्दकारक हो जिनेश ॥
जय ब्रह्मा विष्णु महेश जिनं । जय शंकर शंकर शाँति जिनं ॥१३॥
जय तारण तरण सु आप नाथ । ब्रह्म सूरज को दो चरण साथ ॥
यह अर्जी हमारी बार बार । सुन लीजो दीनानाथ सार ॥१४॥

घत्ता

श्री शाँति महंता गुणगण वंता, शिवतियकंता सौख्यकरा ॥
हम पूजे ध्यावे दुरित नशावे, शिव पद पावे दुक्ख हरा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा–भ्रमत फिरे संसार में जीव अनादि काल ।
जिन पूजन सुत निधि मिले कर्म कटे तत्काल ॥

अडिल्ल

फँसे अनादि काल कर्म में जीव जी ।
अर्जन करते पाप सदा ही अतीव जी ॥
जिन पूजन से कटे महा भवताप जी ।
पुत्र मित्र शिव होय नहीं संताप जी ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

https://frontdesk.co.in/jainism/

आरती

(रचयिता ब्र. सूरजमल जैन)

ॐ जय शाँतिनाथ स्वामी, प्रभु जय शाँतिनाथ स्वामी।
मन वच तन से बन्दूं २ जय अन्तरयामी ॥ १ ॥ ॐ जय ....

गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हर्षे । स्वामी २-
इन्द्र कियो अभिषेक शिखर पर, शिव मग के स्वामी ॥ २ ॥ ॐ जय ....

पंचम चक्री भये आपही, षट् खण्ड के स्वामी । स्वामी २-
राज्य विभव को भोगे २, कामदेव नामी ॥ ३ ॥ ॐ जय ....

अतुल विभव को तृणवत त्यागे, हुवे कर्म नाशी । स्वामी २-
भये आप तीर्थंकर २, शिवरमणी स्वामी ॥ ४ ॥ ॐ जय ....

वीर सिन्धु को नमस्कार कर, आरती करूँ थारी स्वामी । स्वामी २-
"सूरज" शिवपुर पावो २, महा सौख्य धामी ॥ ५ ॥ ॐ जय ....

https://frontdesk.co.in/jainism/

अहगणहर वलय मंता

१. णमो जिणाणं
२. णमो ओहिजिणाणं
३. णमो परमोहिजिणाणं
४. णमो सव्वोहिजिणाणं
५. णमो अणंतोहिजिणाणं
६. णमो कोट्ठबुद्धीणं
७. णमो बीजबुद्धीणं
८. णमो पदाणसारीणं
९. णमो संभिण्णसोदाराणं
१०. णमो संयबुद्धाणं
११. णमो पत्तेयबुद्धाणं
१२. णमो बोहियबुद्धाणं
१३. णमो उजुमदीणं
१४. णमो विउलमदीणं
१५. णमो दसपुव्वीणं
१६. णमो चउदसपुवीणं
१७. णमो अट्ठंगमहाणित्ति कुसलाणं
१८. णमो विउव्वणपत्ताणं
१९. णमो विज्जाहराणं
२०. णमो चारणाणं
२१. णमो पण्णसमणाणं
२२. णमो अग्गासगामिणं
२३. णमो आसीविसाणं
२४. णमो दिटिठविसाणं
२५. णमो उग्गतवाणं
२६. णमो दित्ततवाणं
२७. णमो तत्ततवाणं
२८. णमो महातवाणं
२९. णमो घोरतवाणं
३०. णमो घोरगुणाणं
३१. णमो घोरगुणपरक्कमाणं
३२. णमो घोरगुणबंभयारीणं
३३. णमो आमोसहिपत्ताणं
३४. णमो खेल्लोसहिपत्ताणं
३५. णमो जल्लोसहिपत्ताणं
३६. णमो विप्पोसहिपत्ताणं
३७. णमो सव्वोसहिपत्ताणं
३८. णमोमणबलीणं
३९. णमो घयबलीणं
४०. णमो कायबलीणं
४१. णमो खीरसवीणं
४२. णमो सप्पिसवीणं
४३. णमो महूस्सवीणं
४४. णमो अभियसवीणं
४५. णमो अक्खीणसवीणं
४६. णमो वड्ढमाणाणं
४७. णमो सव्वसिद्धायदणाणं
४८. णमो भयवदोमहदि महावीर वढ्ढमाणहबुद्धिरिसीणं

https://frontdesk.co.in/jainism/